डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
की
हिंदी विषय में
पी–एच.डी. उपाधि
हेतु प्रस्तुत

संक्षेपिका

वर्ष – 2018

मार्गदर्शिका
डॉ. मीना श्रीवास्तव
प्राचार्य / प्राध्यापक, हिंदी विभाग
शा. स्नातक महाविद्यालय,
भितरवार, जिला ग्वालियर (म.प्र.)

शोधार्थी
धर्मेन्द्र कुमार शर्मा

शोध–केन्द्र

माधव महाविद्यालय, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)

संक्षेपिका

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा एक वरिष्ठ साहित्यकार हैं और उनकी सृजनधर्मिता की मूल प्रेरणा सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना का परिष्कार करना है। चेतना का अर्थ है, जाग्रति, साहित्यकार अपनी बहुमूल्य कृतियों के माध्यम से समाज में चेतना, जागृति करने का ही कार्य करता हैं। साहित्य के माध्यम से वह उदात्त और परिष्कृत मानवीय संवेदनाओं को, भावनाओं की अभिव्यक्ति देता है, साहित्य का प्रयोजन ही है। सबका हित। जिस प्रकार पावन गंगा बिना किसी भेदभाव के सबका मंगल करती है, उसी प्रकार साहित्य की सरस धारा भी सबके लिये कल्याण की भावना, वत्सलता, परोपकार, जैसी अनेक वृत्तियाँ संस्कारों के रूप में सुषुप्त अवस्था में विद्यमान रहती है। उन्हें जाग्रत कर, सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख कार्य ही साहित्यकार करता हैं। इस उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए रचनाकार साहित्य की विविध विधाओं में अपने उन्नत समुन्नत विचारों को प्रकट करता है। इसकी भाषा में उसके शब्दों में संजीवनी शक्ति होती है, जो मानव को मानव बनाती है। व्यक्ति का जीवन लक्ष्य निर्धारित करती है और इस तरह सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करती है।

समर्थ कवि डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा एक सहज रचनाकार हैं, उनका मूल्यबोध मूलतः यह है कि रचना को सायासता, कृत्रिमता और आडम्बर से मुक्त और अंतः सलिला–प्रवाह से युक्त होना चाहिये। सर्जना की यह कठिन शर्त है और इसका संबंध रचनाकार की उस अडिग निष्ठा से ही संभव है, जो अपने अनुभव, भावबोध और सृजनात्मक आवेग के प्रति ईमानदार हो। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के

लेखन ने यह जरूरतें हर विद्या में पूरी की हैं– चाहे वह कवितायें हो या फिर नाटक, कहानियाँ या निबन्ध।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने सामाजिक– सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा राष्ट्रीय परिदृश्य को समग्रता से प्रस्तुत किया है। वे तद्‌युगीन साहित्यकारों में एक सामाजिक सृष्टा के रूप में लेखन शब्द को सार्थक बनाने में सफल रहे हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना की सफल अभिव्यक्ति एवं उसका पुनरुद्धार डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने अपने साहित्य में सफलता पूर्वक किया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना पर विस्तार से विचार और विश्लेषण किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध प्रबन्ध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

iFke v/;k; e& सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का अभिप्राय/ अर्थ, संस्कृति का अर्थ, विभिन्न विद्वानों के मत, संस्कृति–समाज, भारतीय समाज की रूपरेखा, भारतीय संस्कृति, रीति, धर्म, दर्शन ,साहित्य एवं भारत में द्विस्तरीय संस्कृतियाँ, सांस्कृतिक जागरण, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति युगीन संक्रमण, चुनौतियाँ और समाधान, समाज का अर्थ, व्यक्ति चेतना, परिवार चेतना और समष्टि चेतना का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

f}rh; v/;k; e& जन्म तथा जन्मस्थान, पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रारम्भिक जीवन एवं उच्च शिक्षा, विद्यार्थी जीवन के मित्र एवं गुरुजन, गृहस्थ जीवन एवं जीविकोपार्जन, पत्रकारिता, साहित्य साधना

एवं संस्थाओं से संबंध, पुरस्कार सम्मान एवं उपाधियाँ आदि संबंधित साहित्यकार के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है तथा डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के कृतित्व का भी सामान्य परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय में– डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की काव्य कृतियों में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट करते हुए सभी जीवन मूल्यों को लेकर सारगर्भित चर्चा की गयी है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के प्रथम काव्य संग्रह 'किरण' में राष्ट्रीयता, सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भावना का सन्देश दिया गया है। सभी सांस्कृतिक त्यौहारों, रीति–रिवाजों को हिल–मिलकर मनाने की बात की गई है। कवि का शब्द–शब्द सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संवाहक है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा द्वारा रचित दोहा संग्रह 'भू और ख के बीच सब' हिंदी की प्राचीन सतसई परम्परा तथा मुक्तक परम्परा में उनका अभिनन्दनीय योगदान रहा है। आपने दोहों के माध्यम से नीति, सदाचार, धर्म, लोक व्यवहार, भृातत्व, मैत्री भावना, परोपकार, सतसंग, करुणा, सेवा तथा अन्य अनेक जीवन मूल्यों का मूल्य दर्शाने के साथ–साथ उपचार, अहंकार, तृष्णा, दम्भ, पाखण्ड आदि अन्य बाह्याडम्बरों के प्रति जाग्रत करने का प्रयास किया है। आपकी दोहा सतसई वर्तमान राजनीति एवं सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के सन्दर्भ में एक अत्यन्त प्रभावशाली रचना है। 'भू और ख के बीच सब' के दोहे नैतिक, सांस्कृतिक, प्रदूषणों को समाप्त करने तथा समाज में उच्च और शाश्वत मूल्यों की पुर्नस्थापना करने के लिए दिशा बोधक सिद्ध हो सकते हैं।

'त्रिगन्धा; की मुक्तिकाओं के माध्यम से कवि ने समाज में व्याप्त ऊँच–नीच की भावनाओं को सर्वथा अनुचित कहा है, और कवि ने कर्म की कसौटी को ही इसका एक मात्र साधन माना है तथा सभी सामाजिकों से प्रेम की भावना के साथ जीवन यापन करने की आशा करता है और डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का मानना है कि जीवनरूपी उपवन को मानव अपने सदाचार से हरा–भरा बना सकता है।

'पीयूषिका' के भक्ति एवं नीतिपरक दोहे भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों की एक अत्यन्त समृद्ध धरोहर है। आज सामाजिक–सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का क्षरण जिस तेज गति से हो रहा है यह चिन्ता का विषय है और ऐसे विषम समय में मानवीय चेतना तथा आध्यात्मिक प्रकाश से ही मानव को उचित रास्ते पर लाया जा सकता है। व्यक्ति का कर्तव्यबोध विलुप्त हो चुका है तथा वह बिना शुभ–अशुभ का विचार किये तथा बिना न्याय–अन्याय की चिन्ता किये, कामान्धता, मदान्धता, भृष्टाचार, पापाचार आदि दुर्गुणों में लिप्त होता जा रहा है। इस नैतिक पतन से मनुष्य को बचाने के लिए 'पीयूषिका' के दोहे संजीवनी साबित हो सकते हैं।

'जन्मजात विषपायी ठहरे' काव्य संग्रह आपका प्रौढ़ स्तरीय चिन्तन है, व्यक्ति तथा राष्ट्र ही आपकी रचनाओं का माध्यम रहा है। प्रस्तुत कविता संग्रह में देशप्रेम, सेवा, त्याग, अध्यात्म, समरसता, सौहार्द जैसे आदर्श मूल्य स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ते हैं। काव्य संग्रह में भृष्ट–दूषित राजनीति तथा अराष्ट्रीयता आदि के प्रति भी आपका आक्रोशित रूप भी दिखाई पड़ता है। 'जन्मजात विषपायी ठहरे' एक ऐसी रचना है, जिसमें कवि का काव्यादर्श, जीवन दर्श तथा स्वयं की

आस्था–अनास्था सभी कुछ शब्द–शब्द में पिरोया गया है, प्रस्तुत रचना कवि चेतना का जीवंत उदाहरण है।

'शेष–अशेष' काव्य कृति अभी अप्रकाशित है, संग्रह की रचनाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक चेतना ही है। प्रस्तुत संग्रह में कवि ने भृष्टाचार, प्रदूषित राजनीति, व्यक्तिका चारित्रिक पतन, लूट–खसोट, सामाजिक अव्यवस्थाएँ आदि समस्याओं को समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक माना है, देश की जड़ों में व्याप्त भ्रष्टाचार को आपने वर्तमान का एक प्रवलवाद माना है और उसे 'खाओवाद' का नाम दिया है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने धार्मिक आडम्बरों की भी कड़ी आलोचना की है तथा संतों का राजनीति में आना भी गलत बताया है। कवि ने भारतीय संस्कृति में गाय के असीम महत्व को भी स्वीकार किया है तथा रीति–नीति, त्यौहरों का भी भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व बताया है।

prqFkZ v/;k; esa& डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के गद्य में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का विस्तार पूर्वक अध्ययन कर सभी गद्य कृतियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय चेतना को स्पष्ट किया गया है। आपका प्रथम एकांकी संग्रह 'आदमी की तलाश' जो पूर्णतः राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत है। एकांकीकार ने देश के नवयुवकों को समाज और राष्ट्र के रक्षार्थ बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए कहा है तथा साम्प्रदायिक एकता को पल्लवित, पोषित करने की भी बात की है। डॉ. शर्मा ने मानवतावादी उच्चादर्शों की महत्ता प्रतिपादित करने के साथ ही भ्रष्टाचार, पीत पत्रकारिता, खोखली नेतागिरी तथा स्वार्थ लोभ, अकर्मण्यता, दिखावटीपन जैसे अनेक दूषणों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। आपने अशिक्षा, पारस्परिक

अविश्वास, अंधविश्वास, जैसी बुराईयों के प्रति जाग्रत किया है। प्रस्तुत संग्रह में शिक्षा, चिकित्सा, जैसी पवित्र सेवा की गरिमा–महिमा को ठेस पहुँचाने वाले अर्थ–लोलुप, चरित्रहीन, शिक्षक एवं चिकित्सक व्यवसाईयों पर भी करारा प्रहार किया है तथा धार्मिक आडम्बर, दहेज प्रथा, असंतुलित परिवार की व्यथा–कथा दर्शाने के साथ ही प्रौढ़ शिक्षा का महत्व एवं नई पीढ़ी की प्रगतिशीलता का भी समर्थन किया है।

आज दुनिया में जो इतनी आपा–धापी मची हुई है, हर तरफ जिधर देखिए उधर, यत्र–तत्र–सर्वत्र। उसका कारण एक ही है। मनुष्य की निम्नगा प्रवृत्तियों का उबाल और उफान और उसकी ऊर्द्धवगामिनी वृत्तियों का उत्तरोत्तर क्षय। आज हम जितने सम्पन्न होते जा रहे हैं मानसिक दृष्टि से, भावनाओं की दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से। इस गिरावट का परिणाम भी हम रोज भोग रहे हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का साहित्य इन हीन वृत्तियों से निजात तो दिलाएगा ही साथ ही हमारी ऊँची और उदात्त वृत्तियों का पोषण भी करेगा। 'आदमी की तलाश' एकांकी संग्रह का प्रत्येक एकांकी परिपक्व, सारगर्भित तथा लोकहित में रत है। पूर्णतः सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना से परिपूर्ण है।

'दरोगा साहब' नाटक में पुलिस प्रशासन की भृष्ट कार्यशैली को उजागर किया गया है। दरोगा साहब द्वारा सीधे–सीधे व्यक्तियों को परेशान करना, झूठे मुकद्मे दर्ज करना, गुण्डों, बदमाशों, अवैध कारोबारियों को संरक्षण प्रदान करना आदि ऐसे 'पुलिस' के कारनामों को नाटक के माध्यम से दिखाया गया है, जिसकी वजह से समाज में अत्याचार, बलात्कार, हत्या, लूट, छीना–झपटी, अपहरण आदि अपराध देश में दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं। 'दरोगा साहब' को केन्द्र में

रखकर लिखा गया आपका व्यंग्य नाटक सामाजिक होने के साथ ही एक बड़े सामाजिक उद्देश्य को पूरा करता है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने 'नेताजी' नाटक में नेताओं का असली मुखौटा दिखाने का प्रयास किया है। आज किस तरह से राजनीति का व्यवसायीकरण किया जा रहा है, किस तरह से भृष्ट, चरित्रहीन, स्वार्थी, अपराधी, चापलूस लोग राजनीति में प्रवेश कर खूब फल–फूल रहे हैं, जबकि चरित्रवान, ईमानदार, न्यायप्रिय एवं उच्च शिक्षित व्यक्तियों की आज की राजनीति में कोई पूछ–परख नहीं है। प्रस्तुत नाटक में नेताओं का यथार्थपरक चरित्रांकन किया गया है।

'आज का श्रवण कुमार' नाटक वर्तमान समाज का एक कटु सत्य है। आज इस भौतिकवादी युग में वृद्ध माता–पिता के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है यह किसी से छिपा नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता के अन्धानुकरण के कारण हमारी यह वरिष्ठ पीढ़ी आज उपेक्षित सा महसूस कर रही है। आज उसकी ही संततियों द्वारा उसे परेशान किया जा रहा है। उन्हें अपमानित, प्रताड़ित किया जा रहा है जिस देश में माता–पिता को ईश्वर मानकर उनकी सदैव पूजा की जाती है तथा सेवा सम्मान का भाव उनके प्रति हमेशा से रहा है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार आज की युवा पीढ़ी को अपने वृद्ध माता–पिता के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने के लिए कहता है, क्योंकि माँ–बाप से बढ़कर संसार में कोई नहीं हो सकता, लेकिन आज वृद्ध माता–पिता को परेशान किया जा रहा है, और उनहें निराश्रित भी छोड़ दिया जाता है, जिसके कारण ये वरिष्ठ पीढ़ी वृद्धाश्रमों में शरण लेने पर मजबूर है। आज इस समस्या ने समाज में विकराल रूप धारण कर लिया है। 'आज का श्रवण कुमार' नाटक सामाजिक, पारिवारिक

चेतना का प्रचार–प्रसार और आज की पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का ऐतिहासिक नाटक 'वीरांगना रानी दुर्गावती' राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है। प्रस्तुत नाटक, अप्रितिम देश–प्रेम, शौर्य, साहस, पराक्रम, वीरता, निर्भयता, धर्मप्रियता तथा निर्धनो, दीन–दुखियों, वृद्धों की सहायता की भावना से परिपूर्ण है। इस ऐतिहासिक नाटक में राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना को भी रेखांकित किया गया है।

'प्रो. अच्छेलाल' एक अप्रकाशित नाट्य कृति हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने जीवन का बहुमूल्य समय एक प्राध्यापक के रूप में व्यतीत किया, एक लम्बी समयावधि तक आप अनेक महाविद्यालयों में प्रोफेसर रहे हैं, आपकी छवि एक कर्तव्यनिष्ठ, नियमनिष्ठ, ईमानदार, प्रोफेसर के रूप में रही है। आपने हमेशा सही को सही और गलत को गलत ही कहा है।

आपने इस नाटक के माध्यम से ऐसे शिक्षक और प्राध्यापकों का पर्दाफाश किया है, जो शिक्षा जगत में शिक्षक और प्राध्यापकों के नाम पर कलंक हैं, डॉ. शर्मा का प्रो. अच्छेलाल केवल नाम का अच्छेलाल है, जबकि वह भृष्ट, बेईमान, पतित, चरित्रहीन, कर्तव्यविमुख आदि कई दुर्गुणों से भरा हुआ है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने प्रो. अच्छेलाल के माध्यम से प्राध्यापक एवं शिक्षा जगत की कमियों को समाज एवं देश के सामने रखकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा द्वारा लिखित समीक्षा/ जीवनी एवं निबन्ध तथा कहानियाँ भी सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रेत हैं।

मृगनयनी एक अध्ययन विद्यार्थियों के उपयोगार्थ ही लिखी गयी है तथा 'पद्मश्री' पण्डित हरिषंकर की व्यांग्यात्मक कृतियों को केन्द्र में रखकर 'हिन्दी व्यंग्य के शीर्ष पुरुष : पं. हरिशंकर शर्मा' समीक्षा/ जीवनी में राजनीतिक, सामाजिक एवं धर्मपरक व्यंग्यों का एक समीक्षात्मक गुलदस्ता प्रस्तुत किया है। आपके निबन्धों का संग्रह 'निबन्धनी' भी सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना का ही जीता जागता उदाहरण है। 'वह रात' कहानी संग्रह में कहानीकार ने समाज में बढ़ते अमर्यादित आचरण, चरित्रहीनता, नैतिकता के क्षरण आदि सामाजिक, सांस्कृतिक विद्रूपताओं के बारे में जाग्रत किया है।

iape v/;k;& को उपसंहार एवं निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। समस्त अध्यायों के निष्कर्षात्मक विवरण द्वारा लघु एवं सीमित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य की भाषा सरल, तरल और प्रवाहमयी है। आपकी कविता में कहीं भी बनावटीपन नहीं है और न ही आप व्यवसयी कवि हैं, प्रारम्भ से ही आप 'सहज' कविता के पोषक पक्षधर रहे हैं, आपकी कविता सहज हैं, कविताओं का प्रेष्य सहज है और प्रेषण साधन भी सहज है और आप भी सहज ही हैं। आपके साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के पूर्णतः दर्शन होते हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। आपका कृतित्व एवं व्यक्तित्व सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

* * *